

## 12641 - जिहाद पर शक्ति जुटाने के लिए रोज़ा तोड़ने की वैधता

### प्रश्न

क्या मुजाहिदों के लिए रमज़ान के महीने में रोज़ा तोड़ना जाइज़ है ? जबकि वे अपने देश में हैं उन्होंने ने यात्रा नहीं किया है।

### विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाहके लिए योग्य है।

जी हाँ, मुजाहिदों के लिए रमज़ान में रोज़ा तोड़ना जाइज़ है ताकि वे जिहाद करने के लिए शक्ति जुटा सकें, भले ही वे अपने देश में ही क्यों हों। क्योंकि रोज़ा उन्हें लड़ाई से और दुश्मनों को आघात पहुँचाने से कमज़ोर कर देता है।

यह इमाम अहमद के दो कथनों में से एक कथन है, और उसे शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या, उनके दो शिष्य इब्ने मुफलेह और इब्नुल कैयिम और इनके अतिरिक्त अन्याविद्वानों ने इसे पसंद (चयन) किया है। देखिए : इब्ने मुफलेह की किताब अल-फुरूअ 3 / 28.

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसे प्रमाणवर्णित हैं जो जिहाद के कारण रोज़ा तोड़ने की वैधता पर तर्क स्थापित करते हैं।

इमाम मुस्लिम (हदीस संख्या : 1120) ने अबू सईदखुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्होंने ने कहा : हम ने अल्लाह के पैगंबरसल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मक्का की ओर -अर्थात् मक्का को विजय करने के अवसरपर - यात्रा किया इस हाल में कि हम रोज़े से थे। हम ने एक स्थान पर पड़ाव डाला, तो अल्लाहके पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : “तुम अपने दुश्मन से करीब हो गए हो और रोज़ा तोड़ देना (रोज़ा नरखना) तुम्हारे लिए अधिक शक्तिप्रद है।” तो यह एक रूख्सत थी, चुनाँचे हम में से कुछ लोगों ने रोज़ा रखा और कुछ ने रोज़ा तोड़ दिया। फिर हम ने एक दूसरेस्थान पर पड़ाव डाला, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : “तुम सुबह अपने दुश्मनों का सामना करने वाले हो और रोज़ा न रखना तुम्हारे लिए अधिक शक्तिप्रद है, अतः तुम रोज़ा तोड़ दो।” चुनाँचे यह एक निश्चित आदेश था तो हम ने रोज़ा तोड़ दिया।”

तथा अबू दाऊद (हदीस संख्या : 2365) ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ सहाबा से रिवायत किया है कि उन्होंने ने कहा : मैं ने अल्लाह के पैगंबरसल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप ने फत्हे मक्का (अर्थात् मक्का पर विजय के वर्ष) अपनी यात्रा में लोगों को रोज़ा तोड़ने का आदेश दिया और फरमाया : “ अपने दुश्मनों के लिए शक्ति अर्जित करो।”

हाफिज़ (इब्ने हजर) ने “अत-तल्खीसुल हबीर” में फरमाया : इसे हाकिम और इब्ने अब्दुल बर ने सहीह कहा है। (हाफिज़ की बात समाप्त हुई).

ये दोनों हदीसे इस बात का तर्क देती हैं कियहाँ पर रोज़ा तोड़ने का हुक्म यात्रा के कारण नहीं है, बल्कि जिहाद करने पर शक्ति जुटानेके लिए है।

इमाम मालिक की मुवत्ता की शरह अल-मुंतक्रा मेंफरमाया :

हदीस के शब्द: ( تَقْوُوا الْعَدُوَّكُمْ ) (अर्थात अपने दुश्मनोंके लिए शक्ति अर्जित करो) तो यही उनके रोज़ा तोड़ने का कारण था . . . अगर कारण यात्राहोती तो दुश्मन के लिए शक्ति जुटाने का कारण वर्णन न किया जाता, बल्कि यात्रा का कारणवर्णन किया जाता। (अंत)

अल-मुनावी ने “फैज़ुल क़दीर” में फरमाया :

हदीस के शब्द “مُصَبِّحُو” (मुसब्बिहू) अर्थात:तुम उस से सुबह के समय मुठभेड़ करोगे (मिलोगे) तथा एक दूसरी रिवायत के शब्द यह हैं कि“तुम अपने दुश्मने से करीब हो गए हो” . . . दुश्मन के करीब होनेऔर उन्हें दुश्मन का सामना करने के लिए शक्ति की आवश्यकता होने का कारण वर्णन करनेसे यह बात निकाली गई है कि यहाँ पर रोज़ा तोड़ना जिहाद के लिए है यात्रा के लिए नहींहै, अतः यदि शहरी क्षेत्र (निवास) में उनसे दुश्मन का सामना हो जाए और उन्हें रोज़ातोड़ कर शक्ति जुटाने की आवश्यकता पड़ जाए तो उनके लिए ऐसा करना जाइज़ है, क्योंकि यहमात्र यात्रा के कारण रोज़ा तोड़ने से कहीं अधिक बढ़कर रोज़ा तोड़ने के योग्य है। (अंत हुआ)।

इब्नुल क़ैयिम ने ज़ादुल मआद (2 / 53, 54) में फरमाया :

वह - अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- उन्हें जब वे दुश्मन से करीब हो जाते तो रोज़ा तोड़ने का आदेश देते ताकि वे दुश्मनसे लड़ाई करने पर शक्ति और ताक़त जुटा सकें, यदि इस तरह की परिस्थिति शहर (निवास) मेंभी पैदा हो जाए और रोज़ा तोड़ देने में उन्हें दुश्मन से मुठभेड़ करने पर शक्ति और ताक़तप्राप्त होती हो, तो क्या उनके लिए रोज़ा तोड़ देने की अनुमति है ? इस बारे में दो मत (कथन) हैं : उन दोनों में प्रमाण की दृष्टिसे सबसे शुद्ध (सही) मत यह है कि : उनके लिए इसकी अनुमति है। इसी मत को इब्ने तैमिय्याने चुना है, और इसी बात का उन्होंने ने इस्लामी सैनिकों को दमिश्क में दुश्मनों से मुठभेड़करने के समय फत्वा दिया था, और इसमें कोई संदेह नहीं कि इसके कारण रोज़ा तोड़ देना, मात्रयात्रा के कारण रोज़ा तोड़ने से अधिक योग्य है, बल्कि यात्री के लिए रोज़ा तोड़ने की वैधताइस बात पर चेतावनी है कि इस स्थिति में भी रोज़ा तोड़ना वैध है, क्योंकि यह वैधता काअधिक हक़ रखता है, क्योंकि वहाँ पर शक्ति केवल यात्री के साथ विशिष्ट और सीमित है, जबकि यहाँ पर शक्ति उसकेलिए है और मुसलमानों के लिए भी है, तथा इसलिए कि जिहाद की कठिनाई और कष्ट, यात्रा कीकठिनाई और कष्ट से अधिकतर है, और इसलिए भी कि मुजाहिद के लिए रोज़ा तोड़ने से प्राप्तहोनी वाली मसलहत (हित और लाभ) यात्री के लिए रोज़ा तोड़ने से प्राप्त होने वाली मसलहतऔर हित से कहीं अधिक बढ़कर और महानतर है, क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है :

وَأَعِدُوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ- [الأنفال: 60]

“और तुम से जितना हो सके उन (दुश्मनों) के लिए शक्ति और ताक़ततैयार करो।” (सरूतुल अनफाल :60)

और दुश्मन से मुठभेड़ के समय रोज़ा तोड़ देना ताक़त और शक्ति के सबसे महान कारणों में से है . . . और इसलिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से जब वे अपने दुश्मनों के करीब हो गए तो फरमाया : “तुम अपने दुश्मन से करीब हो गए हो और रोज़ा तोड़ देना (रोज़ा न रखना) तुम्हारे लिए अधिक शक्तिप्रद है।” तो यह एक रूख़सत थी। फिर हम ने एक दूसरे स्थान पर पड़ाव डाला, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “तुम सुबह अपने दुश्मनों का सामना करने वाले हो, और रोज़ा न रखना तुम्हारे लिए अधिक शक्तिप्रद है, अतः तुम रोज़ा तोड़ दो।” तो यह एक निश्चित आदेश था। अतः हम ने रोज़ा तोड़ दिया।)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहाँ उनके दुश्मन से करीब होने और दुश्मन का सामना करने के लिए उन्हें शक्ति की आवश्यकता होने का कारण बताया है, और यह यात्रा के अलावा एक अन्य कारण है, और यात्रा स्वयं एक स्वतंत्र कारण है। कारण स्पष्ट करते हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका उल्लेख नहीं किया है और न उसकी ओर संकेत किया है . . . सारांश यह कि शरीअत की चेतावनी और उसकी तत्वदर्शिता (हिकमत) इस बात का तक्राज़ा करती है कि जिहाद के लिए रोज़ा तोड़ना, मात्र यात्र के लिए रोज़ा तोड़ने से, अधिक योग्य है। फिर यह कैसे नहीं होगा जबकि शरीअत ने उसके कारण की ओर संकेत किया है, उस पर चेतावनी दी है, उसके हुक्म को स्पष्टता के साथ वर्णन किया है और उनके लिए उसके कारण रोज़ा तोड़ना निश्चित करार दिया है। तथा इसका प्रमाण ईसा बिन यूनुस की रिवायत भी है जिसे उन्होंने ने शोअबा से उन्होंने ने अम्र बिन दीनार से रिवायत किया है कि उन्होंने ने कहा : मैं ने इब्ने उमर को फरमाते हुए सुना कि : अल्लाह के पैगंबर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का के विजय के दिन अपने साथियों से कहा : “यह लड़ाई का दिन है, अतः तुम रोज़ा तोड़ दो।” चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस हदीस में लड़ाई को रोज़ा तोड़ने का कारण बताया है, और उस पर रोज़ा तोड़ने के आदेश को अक्षर “फा” (अर्थात् तो, अतः) के द्वारा आधारित किया है, और इस शब्द से हर एक यही समझता है कि रोज़ा तोड़ना लड़ाई के कारण है। (इब्नुल क़ैयिम की बात समाप्त हुई)।

और अल्लाह तआला ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान रखता है।

यह युद्ध जिसका इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह ने उल्लेख किया है, वर्ष 702 हिज्री में मुसलमानों और तातारियों के बीच हुई थी और उसमें मुसलमानों को विजय प्राप्त हुई थी।

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह ने फरमाया :

उन्होंने ने -अर्थात् इब्ने तैमिय्या रहिमहुल्लाह ने - उनसे लड़ाई की अवधि के दौरान लोगों को रोज़ा तोड़ने का आदेश दिया और स्वयं उन्होंने भी रोज़ा तोड़ दिया, वह सैनिकों और सेनापतियों पर चक्कर लगाते थे और अपने हाथ में कोई चीज़ लेकर खाते थे ताकि उन्हें बतलायें कि लड़ाई करने पर शक्ति जुटाने के लिए उनका रोज़ा तोड़ देना सर्वश्रेष्ठ है, तो लोग भी खाते थे। (इब्ने कसीर की बात समाप्त हुई)

देखिए : “अल बिदाया वन्निहाया” (14 / 31).